सामवेद के तत्व

साम का अर्थ समता, सान्त्वना और विषय को अन्त तक पहुँचाना है। जैसा कि दो धातुओं–षोऽन्तकर्मणि और साम सान्तने, सान्त्वने सामप्रयोगे [क्षीरतरङ्गिणी १०–१८३ और ४–३७ धातु] से बना, इसे माना गया है। इसे जीवन में ज्ञानकर्म के पश्चात् उन्नतिदायक उपासना काण्ड बताया गया है।

आजकल उपलब्ध और प्रचलित सामवेद की कौथुम शाखा है। जिसमें १८७५ मन्त्र हैं। उसके लगभग १८०० मन्त्र ऋग्वेद में भी हैं तथा २५८ मन्त्र अन्य वेदों मे भी मिलते हैं। केवल ७५ मन्त्र ऐसे रह जाते हैं जो केवल सामवेद मे ही हैं, पाठ भेद वाले २५ मन्त्र और मिला ले तो यह संख्या १०० होती है।

जब सन १९४३ मैने वाराणसी से वेद–ज्योति निकाली थी और चित्र में चारों वेदों के नामों मे पहले ऋग्वेद छापा था तो श्री सातवलेकर जी ने पत्र मे लिखा कि पहले तो सामवेद है ऋग्वेद नहीं, कृष्ण ने गीता में कहा है – 'वेदानांसामवेदोऽहम्' तदनुसार सामवेद पहले है और उसी के लगभग १८०० मन्त्र अन्य वेदों में है। अब श्री. एस. वी. गणपति [मद्रास] भी यही लिख रहे हैं कि ये मन्त्र सामवेद से ही अन्यत्र लिए गए हैं।

इस वेद में अधिकांश उन्हीं सामगन्त्रों के आधार पर तत्वों का विचार किया गया है और एक–एक तत्व के उदाहरण रूप में एक दो–मन्त्रों को ही प्रस्तुत किया है।

१) अग्नि – तत्व –

अग्नि के अनेक अर्थ हैं ईश्वर, आग, शरीर की आग पित्त, जठराग्नि, अग्रणी, विव्दान, नेता आदि । इसके ३२७ मन्त्र हैं। सामवेद के कुल १८७५ मन्त्रों में पहला मन्त्र ही अग्नि से संबंधित है–

१) अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातथे।
नि होता सत्सि बर्हिषि ॥
२) अग्निः प्रियेषु धामसु कामो भूतस्य भव्यस्य।
सम्राडेको विराजति ॥
१७१० ॥उ.८–२–१९.३
३) अग्निरिन्द्राय पवते दिवि शुक्रो विराजति।
महिषीव विजायते ॥
१८२५ ॥उ.९.२.४.१॥
४) अग्निर्ज्योतिजर्योति रग्निरिन्द्रो ज्योति–ज्योर्तिरिन्द्रः ॥

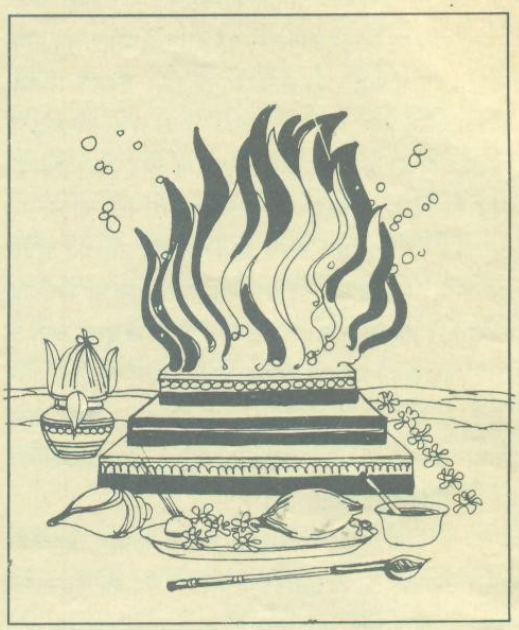

सूर्यो ज्योति र्ज्योतिः सूर्यः॥
१८३१ ॥९.२.८.१॥
५) अग्ने विवस्दाभरास्मभ्यमूतये महे ।
देवोध्यासि नो दृशे ॥
१० ॥पू. १.१.१.१०॥

२) इन्द्र तत्व [६४८ मन्त्र]

वेदों में इन्द्र सम्बन्धी मन्त्र सबसे अधिक हैं। इन्द्र के अर्थ भी अधिक हैं। परमेश्वर, जीव, राजा, सेनापति, वणिक, सूर्य, वायु, विद्युत, धनी आदि अनेक अर्थ हैं। यह ऋग्वेद में सर्वाधिक १४ बार, अथर्ववेद में १ बार आया है। निम्नलिखित मन्त्र सामवेद में भी हैं।

६) शुनं हुवेममघवानमिन्द्रमस्मिन मरे नृतम वाजसातौ।
श्रृणवन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि सञ्जितं धनानि
॥ ३२६॥पू. ४.१.७२

रक्षा के लिए इस संघर्ष में हम धनी–इन्द को बुलाए– जो श्रेष्ठ नेता, उग्र है, युध्दों में वृत्रों का घातक और धनों का जेता है। एक ह्यग्ने। (महामाम्नयर्चिक)

ऋग्वेद का प्रथम मन्त्र अग्निमीडे. [सामवेद का ६०५] अग्नितत्व का प्रतिपादक है। दार्शनिक दृष्टि से अग्नि और इन्द्र परमेश्वर, और

इन्द्र परमेश्वर जीव, मन, प्राण है।

कुछ और मन्त्र देखिए –

७) इन्द्रो विश्वस्य राजति ॥ पू. ५.२.२.१० ॥

८) इन्द्र उक्थेमिर्मन्दिष्ठो वाजानां च वाजपतिः ।
हरवान्तसुतानां सखा ॥ पू.३.१.४.४ ॥

९) इन्द्र घनस्य सातये हवामहे जेतारमय राजितम्
स नः स्वर्षदति व्दिषः स नः स्वर्णदति व्दिषः ॥
महानामन्यार्चिक ७.॥

१०) एवा हीन्द्र ....॥ महानामन्यार्चिक – १० ॥

सामवेद इन्द्रकाण्ड [पूर्वार्चिक] में ३५२ मन्त्र हैं। महानामयार्चिक में भी इन्द्र की महिमा वार्णित है यह इन्द्र परमात्मा, जीवात्मा, मन और प्राण है। इन्द्र ५ प्राणों में मुख्य प्राण है।

३. सविता [२९ मन्त्र]

इसके अनेक अर्थों में दार्शनिक दृष्टि से परमात्मा, बुध्दि अर्थ है।

११) अमित्यं देवं सवितारमोण्यो कविक्रतुमर्चामि सत्यसवं
रत्नधामभि प्रियं मतिम्।
ऊर्ध्वा यस्यामतिर्मा अदिद्युतत्सवीमनि हिरण्यपाणिरमिमीत
सुक्रतुः कृपा स्वः ॥
४६४ ॥ उ. ५.२.३.८॥

१२) सावित्री मन्त्र– तस्तवितुवरेण्यम् ॥
१४६२ ॥उ. ६.३.१०.१॥

४) अश्वी [३१ मन्त्र]

यह सदा व्दिनयन में अश्विनो के रुप में आता है। दार्शनिक तत्व की दृष्टिसे यह मन–बुध्दि और ज्ञान कर्मेन्द्रिय है। यह शरीर मे व्याप्त प्राण अपान शक्तियाँ हैं– सविता [जीवात्मा] की दो बाहें हैं–

१३) इमा ३ वां दिविष्टयसा हवनते अश्विनौ।
अय वामह्वेज्चसे शचीवस विशं विशं हि गच्छथः॥
३०४,७५३॥[पू. ४.१.२.२][उ.१२.१.५.१]

शक्ति युक्त दो अश्वी को प्रजाएँ आव्हान करती हैं। वे किरण–समान अज्ञान दूर करते हैं, मै उनका आव्हान करता हूँ। ये दोनों प्रत्येक योगी को मिलते हैं।

५] उषा [चेतना](१२५ मन्त्र)

१४) आदित् प्रत्नस्य रेतसो ज्योतिः पश्यन्ति बासरन।
परो यदिध्यते दिवि ॥ २० ॥
[पू. १.१.३.१०]

उपासक सनातन जगत् की बीज ज्योति चेतना को दिन समान प्रकाशमान देखते हैं जो उत्कृष्ट द्यौ [मस्तिष्क] मे चमकती है।

१५] सुमन्मा वस्वी स्ती सूनरी ॥ १६५४ ॥
उ. ८.१.१४.१

सुविचार पूर्ण भक्तिधन वाली, रमणीय, प्रिय– रमणीक, उषा चेतना है।

६. अदिति [६२ मन्त्र]

यह तत्व अखंण्डित सरस्वती [विद्या] है। माता, पिता, पुत्र समान रक्षक है, सभी मनुष्यों के लिए आवश्यक है।

१६) प्रैतु ब्रम्हणस्पतिः प्र देव्येतु सूनृता।
अच्छा वीर नयं पंक्तिराधस देवा यज्ञं नयन्तु नः ॥
५६, पू.१.२.१.२॥

ज्ञान का पति परमात्मा हमें सत्य–प्रिय सरस्वती वाणी को देता है जो अच्छे वीरनरश्रेष्ठ को मिलती है और इन्द्रियाँ जिससे यज्ञ सिध्द करती हैं।

७] क्रिया शीलता [१२ मन्त्र]

१७) अपामीवापम स्त्रिधमप सेघत दुर्मतिम ।
आदित्यासो युयोतना नो अहंसः ॥
३९७ पू. ५.१.१.७॥

हे अदित्यों (विव्दानों, १२ मासों) हमें क्रियाशीलता देकर रोग–कमजोरी दुराचार दुर्मति–पाप से दूर कीजिए॥

८] सोम [प्रेरक मन][२८७ मन्त्र]

सोम के ईश्वर, औषधि, इन्द्र, आदि अनेक अर्थ हैं। दार्शनिक दृष्टि से सोम तत्व प्रेरक मन है।

१८) सोमःपूषा च चेततुः विश्वासो सुक्षितीनाम्। देवत्रा रथ्योर्हिता॥
१५४ पू. २.२.१.१०॥

सोम और पूषा [मन भक्तिरस] और जीवात्मा। पृथ्वी के सब मनुष्यों में चेतना उत्पन्न करते हैं, दिव्य गुणों की रक्षा करते हैं। ये शरीर–रथ के स्वामी जीव–प्राण के लिए हितकारी हैं।

१९) इमे ते इन्द्र सोमाः सुतासो ये च सोत्माः।
तेषां मत्स्वप्रभूवसोः ।
२/२, पू. ३.१.२.९. ॥

हे जीव, ये सोम (मन की शांतियाँ) तेरे लिए उत्पन्न की गई हैं। व आगे भी रहेंगी। उनसे तू हृष्ट–पुष्ट हो।

२०) इमे इन्द्र मदाय ते सोमाश्चिकित्र उक्थिनः ।
मधोः पान उप नः गिरः श्रृणु रास्व स्तोत्राय गिर्वणः ॥
२९४, पू. ४.१.१.२ ॥

हे जीवात्मा। ये सोम [मन की शक्तियाँ] वेदानुकूल तेरे लिए जाने गए हैं। भक्तिरस का पान करते हुए तू हमारी बाणी सुन और वेदवाणी के स्तोत्र के लिए शक्ति दे॥

९] मित्र (विश्वेदेवाः) मस्तिष्क (५३ मंत्र)

१०] वरूण वरणीय निवारक बाह्य संसार (८ मंत्र)

ये दोनों मित्र वरूण आक्सीजन–हाइड्रोजन और इलेक्ट्रान–प्रोटान तत्व हैं।

२१) उर्जो मित्रो वरुणः। पिन्वतेजः पीवरीमिष कृणुही न इन्द्रः॥
४५५ पू.२.२.९.॥

मित्र वरण उर्जा से इन्द्रियों को पुष्ट करते हैं और बड़ी इच्छाओं को तृप्त करते हैं।

२२) ऋजु नीती नो वरुणो मित्रो नयति विव्दान् ।
आर्यमा देवैः सजोषाः ।
२१८, पू. ३.१.३.५॥

सरल सत्य मार्ग से हमें मित्र–वरण देवों (इन्द्रियों) से प्रीतियुक्त ज्ञानी–विव्दान न्यायकारी होकर ले चलें।

२३) आ नो मित्रावरुणा घृतर्गव्यतिमुक्षतम् ।
मध्वा रंजासि सुक्रत् ॥
२२०, पू. ३.१.३.७॥

सुकर्मी मित्र– वरूण हमारे इंद्रिय भागों का प्रकाशों और दीप्त से मधुर प्रकाश से सब लोगों को सीचें।

११] जीवन [जीवनी शक्ति तत्व] [७२ मंत्र]

२४) अमीषां चित्तं प्रतिलोभयन्ती गृहाणाड न्यप्वे परेहि।
अभिप्रेहि निर्दय हृत्सु शोकैरन्धेनाभिस्तमसा सचन्ताम् ॥
१८६१.३०.९.३.५.१॥

हे अप्वा (निरोधक जीवनी प्राण शक्ति) इन आसुरी भावनाओं की चेतनता को लुप्त करती हुई, काम आदि के अंगो को जकड़ दे, इन पर आक्रमण कर, उन्हें दूर भगा, हृदयों मे काम आदि को शोको से जला। शत्रु अंधेरे तम से मुक्त हों। इसमें अप्वा शक्ति शस्त्र का भी वर्णन है।

१२] ऋत [सत्य] [१० मन्त्र]

२५) ऋते न यावुतांवृधो ऋतस्य ज्योतिषस्वती।
ता मित्रावरणा हुवे ॥
७९४ उ. २.१.७.२॥

जो मित्रवरुण ऋत से ऋत के वर्धक हैं, ऋत ज्योति के पति हैं, मैं उनका आह्वान करता हूँ।

२६) ऋतेन मित्रावरूणो ऋतावृधावृतस्पृषा ।
ऋतुं बृहन्तमाशाये ॥
८४८ उ. २.२.६.२ ॥

मित्र वरूण ऋत के व्दारा बढ़ने वाले, ऋतस्पर्शी है और बड़े शासन कर्म से व्याप्त हैं।

२७] ऋमृतेन सपन्ता इषिरं दक्षमाशाते।
अद्रुहा ढेर्वो वघेति ॥
१४६६, ३०, ६.३.११.२॥

ऋत को ऋत से बढ़ाते हुए मित्र वरण अनीष्ट बल बढ़ाते और द्रोहरहित होकर बढ़ाते हैं।

२८) ऋतावान वैश्वानरम् ऋतस्य ज्योतिषस्पतिम्।
अजसं धर्मभीमहे ॥ १७०८ [उ. ८.२.१९.१] ॥

सत्यनिष्ठ, सत्य ज्योति के स्वामी, सब नर–नारियों के हितकारी अविनश्वर देदेप्यमान ईश्वर को हम प्राप्त हों।

१३] देव [मरुत्] [दिव्य विचार] [३६ मन्त्र]

२९) एवा हि देवा॥ महाना. ।१०,६५०॥
दिव्य विचार निश्चय ही लाभकारी है।

३०] अर्चन्त्यर्क मरुत स्वर्का आ स्तोभति श्रुतो युवां स इन्द्रः ॥
मरुत् देव [विचार] उत्तम अर्चना के साधक हैं। इन्द्र [जीवात्मा] उन विचारों को सुनता और चेतना की प्रशंसा करता है।

१४] त्वष्टा [सूर्य शक्ति = बुध्दि] (१ मन्त्र)

३१) अत्राह गोरमन्वतनाम त्वष्टुरपीच्यम् ।
इधा चन्द्रास्ते गृहे ॥
१४७, पू. १.१.६.३॥

यही त्वष्टा सूर्य–बुध्दि को किरण अलग से चन्द्रमा [मन] घर में मानी जाती है।

१५] आपः [व्यापकबुध्दि, जल कण, वीर्य] [३ मन्त्र]

३२) आपो हिष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जेधातन । महेरणाय चक्षसे
॥१८३७ १.२.१०.१॥

३३) यो वः शिवतमो रसम् तस्य भाजयतेहनः उरातीरिव मातरः॥
१८३८ ॥३०.९.२.१०.२

३४) तस्मा अरंगमाम वो यस्य रग्याय जिन्वथ ।
आपो जनयथा च नः ।
१८३६ ॥[३० ९ .२.१०.३]

व्यापक आपः बुध्दि, जल–कफ तत्व सुख–बल दायक बड़े रण और आनन्द तथा दृष्टि के लिए माताओं के समान सर्वाधिक कल्याणकारी और उत्पादक हैं।

३५) सहषमाः सहवत्सा उदेत विश्वा रुपाणि बिभ्रतिदयूध्नी।
उरु पृथरयं वो अस्तु लोक इमा आपः सुप्रायणा इहस्त
॥ ६२६ ॥[पू. ६.३.४.१२]

ये व्यापक बुध्दियां अनेक रुपों में हैं। यही सुगमता से प्राप्त हों।

१६] वृत्त [८ मन्त्र]

३६] वृत्रस्य त्वा श्वथादीषमाणा विश्वे देवा अजहुर्ये सखायः।
मरूद्भिदकरन्द्र सख्यं तं अस्त्वथे मा विश्वाः पृतना जयासि॥
३२४ ॥[पू. ३.१.४.२]

ज्ञान का आवरक वृत्त अहं, दम्भ [पाप] भी एक तत्व है। हे जीव, सब विचार वृत्रसर्प की फुंकार से भाग से रहे हैं। वे तुझे अलग

कर रहे हैं। मरूतों से तेरी मित्रता हो और इन सब सेनाओं को विजयी करों ।

३८) वि रक्षो वि मृधो जहि नि तृत्रस्य हन् रुज ।
वि मन्युमिन्द्र वृत्र हन्नमित्रस्यमिदासतः ॥
१८६७ ॥[३०.९.३.७.१]

हे जीव तू वृत्रधाती है। हमारी राक्षसी, राजसी, तामसी, वृत्रियों को नष्ट कर । वृत्र की दोनो हनु [बेड़ियों], हननशक्तियों [शारीरिक व मानसिक] को भग्न कर। दास बनाने वाले शत्रु की उग्रता को नष्ट कर।

२९) प्रभो जनस्य वृत्रहन् समर्येषु ब्रवावहै।
शूरो यो गोषु गच्छति सखा सुशेवो अव्ययुः ॥
६५९, महाना ९ ॥

हे जन के वृत्रनाशक प्रभु, मनुष्यों मे हम दो आपका प्रवयन करते हैं। जो शूर इन्द्रियों मे व्याप्त है, व्यापक है वह सखा, सुखद अव्दितीय है।

४०) प्र व इन्द्राय वृत्र हन्तमाय विप्राय ।
गाथं गायत यं जुजोषते ॥
४४६ पू. ५.२.६.१०॥
[१११३ उ. ४.१.२४.१]

हे उपासकों । विप्र इन्द्र [वृत्र हन्ता] की भक्ति के साम गान गाया करो जिसे वह चाहता, स्वीकार करता है।

१७] वाक् तत्व [१२ मन्त्र]

४१) विस्त्रो वाचः उदीदरते गावो मिमन्ति धेनवः ।
हरिरेति कनिक्रदत् ॥ ४७१ ॥

तिन वाणियाँ [गद्य, पद्य, गीति, अ–उ–म बोलने पर ईश्वर साक्षात होता है जैसे गौऐ बछडे को देखकर रभाती हैं।

४२) युञ्जे वाचं शतपदीं गाये सहस्त्रवर्तिनि ।
गायत्रं त्रष्टुभं जगत् ॥
१८२९ [उ.९.२.७.२]॥

मैं सैकड़ो पदवाली वाणी का उपयोग करता हूँ, उस हजारों रागों मे गाता हूँ जो गायत्री – त्रिष्टुप–जगती छन्दों में होते हैं।

४३) नम सखिभ्योंपूर्वसदभ्यों नमः साकं निषभ्यः।
युञ्जे वाचं शतपदीम् ।
८२८ (३०९.२.७.१)

पूर्व और साथ मे बैठे सखाओं के लिए शतपदी वाणी प्रयुक्त करूँ ।

१८] वात [वायु, वात नाडीमण्डल][३ मन्त्र]

४४) वात आ वातु मेषजं शम्भु मयोमुनो हृदे। प्रण आयूषि तारिषत ॥

४५) उत वात पितासि नः उत भातोतः नः सखा। स नो जीवातवे कृधि॥

४६) ऋदो वात ते गृहेऽमृतं निहितं गुहा । तस्य नो धेहि जीवसे ॥
[१८४०, १२४१,१२४२]
[पू. २.२.४.१०–उ. ९.२.१११.३]

वात हमारी दवा है। [वायु] हमारे हृदय – मस्तिष्क में कल्याणकारी आयुकारक है वात हमारा पिता–भ्राता–सखा है, वात हमारे जीवन के लिए किया गया है। वे वात–तेरी गुहा मे अमृत भरा है, उसे हमारे जीवन के लिए कर।

१९] द्यावापृथिवी [शिर–शरीर][३८ मन्त्र]

१७) मन्ये वां द्यावापृथिवी सुभोजसो ये अप्रथेथाममितममि योजनम्।
द्यावापृथिवी भवतं स्योने ते नो मुञ्चंतमंहसः ॥
६२२ [पू. ६.३.४.८]

द्यावा पृथिवी [शरीर में सिर धड़] सुन्दर भोजन देने वाले, सुखद है, वे हमें पाप से बचाएँ ।

४८) वसन्त इन्नु रन्त्यो ग्रीष्मः इन्नु रन्त्यः।
वर्षाण्यनु शरदो हेमन्तः शिशिर इन्नु रन्त्यः ॥
६१६ [पू. ६.३.४.२]।

२१] दिशा [५१ मन्त्र]

४९) विदा मघवन् विदा मातुमनुशंसिषी दिशाः ॥
[महाना१]

२२] ब्रम्ह – [ज्ञान]

५०) ब्रम्ह जज्ञानं प्रंथमं पुरषताद तिसीमतः सुरुयो वेन आवः ।
स बुघ्न्या उपमा अस्य विष्ठोः सतंश्चयोनि मिसतश्च वि वः॥
[६.११.९३]

प्रस्तुतकर्ता–
श्री. वीरेन्द्र सरस्वती
लखनऊ

क्या आप जानते हैं?

सान फ्रान्सिस्को के एक मदिरालय "बार" में मदिरा परोसनेवाली महिलाऐं रेडिओ "हेडसेट" से (बारमेन) यांत्रिक मदिरा संचालक से बातचीत कर सकती है। यह यंत्रमानव बात कर सकता है, १५० सें. भी ज्यादा पेय मिलानेकी जानकारी रखते हैं। यहाँ तक की बिल बनाना और उसका परीक्षण भी अपने आप करके प्रतियाँ सुधार सकते हैं।